JPSC MAIN EXAM 2017

HINDI LITERATURE

पाजेब

कहानी का सार

पाजेब कहानी का धरातल बहुत ही साधारण सा है जिसे लेखक ने आत्मकथात्मक शैली में प्रस्तुत किया है. पर मूलतः इस साधारण सी कथा का वैचारिक धरातल बहुत असाधारण है. एक छोटी सी घटना से कहानी की शुरुआत होती है. कथावाचक बताता है कि बाजार में एक नई तरह की पाजेब चली है. जो बहुत ही सुन्दर है. जिसके पाँव में पड़ती है उसी के नाप की हो जाती है. आस-पास सबके पास वह पाजेब है. बच्चों की इसी देखा देखी में चार बरस की मुन्नी भी जिद करती है कि उसे पाजेब चाहिए. उसी दिन दोपहर को मुन्नी की बुआ आती हैं और अगले इतवार को उसके लिए पायल लाने का वादा करके चली जाती हैं. अगले इतवार को बुआ मुन्नी के लिए पाजेब ले आती हैं. मुन्नी पाजेब पहनकर खुशी से फूली नहीं समाती और आस-पास सभी को पाजेब दिखाती है. मुन्नी के नन्हें-नन्हें पैरों में पाजेब उसके आठ बरस के भाई आशुतोष को भी बहुत भाती है और वह भी उसे आस-पास दिखाने ले जाता हैं और खूब खुश होता हैं. कुछ ही देर बाद मुन्नी की पाजेब देख आशुतोष को ईर्ष्या होने लगती है. वह जिद करता है कि मुन्नी को पाजेब दी हम भी बाइसिकिल लेंगे. बुआ ने उसे समझाया कि--“ छी-छी तू कोई लड़की है? जिद तो लड़कियाँ किया करती हैं, और लड़कियाँ रोती हैं. कहीं बाबू साहब लोग रोते हैं!”[1]

बुआ आशू से उसके जन्मदिन पर बाइसिकिल देने का वादा कर के चली जाती हैं. इधर बुआ के जाते ही मुन्नी की माँ यानि कथावाचक की श्रीमती जी भी पाजेब बनवाने की ख्वाहिश प्रकट करती हैं. और पाजेब संभालकर रख देती है. अचानक रात को जब लेखक अपनी मेज पर होते हैं श्रीमती जी आकर एक पाजेब के खो जाने का जिक्र करती हैं. लेखक के यह कहने पर कि पाजेब के बारे में उन्हें कोई जानकारी नहीं है वे नौकर बंसी का इसमें हाँथ होने पर संदेह करती हैं. पर लेखक को बंसी पर पूरा विश्वास है कि यह चोरी उसने नहीं की. इस पर श्रीमती जी कहतीं हैं—“हो चुका बस कुछ तुमसे. तुम्हीं ने तो उस नौकर की जात को शहजोर बना रखा है. डांट न फटकार, नौकर ऐसे सिर न चढ़ेगा तो क्या होगा.”[2] श्रीमती जी का मानना था कि हो न हो सोलह में से पन्द्रह आने यह बंसी का ही काम है. ‘नौकर तो बड़े छंटे होते हैं. जरुर बंसी ही चोर है. नहीं तो क्या फ़रिश्ते लेने आते’.

फिर लेखक ने श्रीमती जी से पूछा कि उन्होंने आशुतोष से पूछा कि कहीं पाजेब उसने तो नहीं देखी? देखी इस पर श्रीमती जी ने कहा कि वे पूछ चुकीं हैं. आशुतोष के पास पाजेब नहीं है. वे बोलीं – ““वह तो खुद ट्रंक और बक्स के नीचे घुस-घुस कर खोज लगाने में मेरी मदद करता रहा है.” इसपर लेखक ने कहा कि उसे पतंग का बहुत शौक है. श्रीमती जी उलटे लेखक पर ही बरस पड़ीं कि वे ही उसे पतंग की शह देते हैं. बाद में लेखक को पता चला कि उसी शाम को आशू पतंग और एक डोर का पिन्ना नया लाया है. दूसरे दिन लेखक ने आशू को बुलाकर पूछ-ताछ शुरू की. यही से शुरू होता है कहानी का वास्तविक धरातल और जैनेन्द्र के मूल विचार.

पिता के पूछने पर आशू सिर हिलाकर मना कर देता है. पिता(लेखक) के मन में तरह तरह के सिद्धांत आने लगते हैं. वह सोचता है कि ऐसे समय में बालकों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करना चाहिए. ‘प्रेम से ही अपराध-वृत्ति को जीता जा सकता है’. लेखक कई बार बात को घुमा-घुमा कर आशू से सच उगलवाने का प्रयास करता है. इस पर आशू क्रोधित हो जाता है. लेखक को प्रतीत होता है कि ‘उग्रता दोष का लक्षण है’. फिर श्रीमती जी के पूछने पर लेखक कहता है कि संदेह तो मुझे होता है.

लेखक सोचता है कि यह एक भारी दुर्घटना है. अगर बच्चे ने चोरी की है तो उसमे बच्चे से ज्यादा माता-पिता का दोष है. यह उसके ऊपर एक भारी इल्जाम है और यह उसकी(लेखक और श्रीमतीजी की) आलोचना है. लेखक आशू को बुलाकर फिर पूछता है कि पाजेब उसने छुन्नू को दी है न? इस पर बालक पहले तो मना कर देता है पर बार-बार पूछे जाने पर सिर हिला कर हां कर देता है. लेखक कहता है मुंह से बोलो! आशु ने कहा- 'हाँ-आ'. लेखक खुशी के मारे आशू को गोद में उठा लेता है और गर्व से श्रीमती जी के पास ले जाकर कहता है कि हमारे बेटे ने सच कबूल कर लिया है. और श्रीमती जी भी अपने बेटे की बलैंयाँ लेने लगती हैं. फिर लेखक आशू को अकेले में ले जाकर उससे कहता है कि जाओ बेटे छुन्नू से पाजेब लेते आओ. इस पर बेटा जवब देता है कि अगर पाजेब छुन्नू के पास नहीं हुई तो वो कहाँ से लाकर देगा? लेखक ने कहा कि छुन्नू ने जिसे पाजेब दी होगी उसी का नाम बता देगा. यह सुनकर भी आशू बार-बार यही बात दोहराता रहा कि अगर छुन्नू के पास न होगी तो वो कहाँ से लाकर देगा. तब लेखक कई प्रकार से बेटे से बात निकलवाने का प्रयास करता है. वो जो-जो कहता है आशू सिर हिला कर हाँ में जवाब देता है. वो कहता है—"अच्छा तुमने कहाँ से उठाई थी?" आशू -"पड़ी मिली थी." लेखक- "नीचे जाकर छुन्नू को दिखाई?" आशू- "हां". लेखक-"फिर उसी ने कहा इसे बेचेंगे?" आशू- "हां". लेखक- "अच्छा पतंग लाने को कहा?". आशू- हाँ." लेखक- "सो पाजेब छुन्नू के पास रह गई." आशू-"हां." बाद में निष्कर्ष निकला कि पाजेब पतंग वाले के पास होगी. फिर लेखक ने कहा कि जाओ बेटा छुन्नू से या पतंग वाले से पाजेब ले आओ उसे कहना कि हमारे बाबूजी तुम्हें इनाम देंगे. इसके बाद भी आशू यही दोहराता रहा कि छुनु के पास न हुई तो वो कहाँ से लाकर देगा?

पिता को बच्चे की जिद बुरी मालुम हुई. वह गुस्से में बच्चे को ताड़ता रहा और कहा कि—"जाओ जहां हो वहीँ से पाजेब लेकर आओ." पर आशू अपनी जगह से हिला तक नहीं तो पिता ने उसे कान पकड़ कर उठाया और कहा कि—"जाओ पाजेब लेकर आओ नहीं तो घर में तुम्हारा कम नहीं." पिता को बहुत क्षोभ हो रहा था कि आशू सच बोलकर अब किस बात से डर रहा है. उसने फिर से बच्चे को पाजेब लाने के लिए प्यार से मनाया और कहा कि जिसको बेचीं होगी उससे कहना की दाम दे देंगे. इधर बीच श्रीमती जी छुन्नू की माँ से बात कर आईं. छुन्नू की माँ ने कहा कि उसका लड़का ऐसा काम नहीं करता. छुन्नू ने आशू से कहा कि-"क्यों रे मुझे कब दी थी?" उलटे आशू ने जिद करके कहा कि- "कह दो नहीं दी थी?" नतीजा यह हुआ छुन्नू की माँ ने उसे खूब पीटा और खुद भी रोने-गाने लगी. रह-रह कर छुन्नू को खूब कोसा भी.

घर लौट कर श्रीमती जी ने छुन्नू और उसकी माँ को जली-कटी सुनाई और कहा कि छुन्नू और उसकी माँ दोनों एक जैसे हैं. लेखक ने श्रीमती जी के आचरण पर आपत्ति जताई. कुछ देर बाद छुन्नू और उसकी माँ श्रीमती जी के साथ लेखक के घर आए. दोनों महिलाओं के बीच अब शांति थी. छुन्नू की माँ कहने लगीं कि छुन्नू तो पाजेब के लिए इनकार करता है. उन्होंने यह भी आग्रह किया कि वे पाजेब के दाम दे देंगी. लेखक को यह बात जांची नहीं और उसने छुन्नू से फिर से पूछा. छुन्नू ने फिर इंकार किया और कहा कि मैंने पाजेब आशु के हाँथ में देखी थी. वह पतंग वाले को दे आया. पाजेब चांदी की थी. छुन्नू ने आगे जोड़ा कि मुझे भी साथ चलने के लिए कह रहा था. लेखक ने छुनु की माँ से कहा देखिये पहले तो देखने से इनकार कर रहा था अब खुद ही सारी बात बता दी. छुन्नू की माँ फिर उसे पीटने लगीं. लेखक ने बीच-बचाव करके छुन्नू को बचाया. फिर छुन्नू को बाहर खेलने भेज दिया. छुन्नू की माँ ने आग्रह किया कि मन को तसल्ली देने के लिए यदि वे चाहें तो घर की तलाशी ले सकते हैं. पाजेब यदि होगी तो जायेगी कहाँ? लेखक ने बिना वजह बात के बढ़ने का संदेह जताया और तलाशी से इंकार कर दिया.

इस पूरे क्रम में लेखक अपने दफ्तर समय से नहीं जा पाता और जाते-जाते श्रीमती जी को आशू से प्रेमपूर्वक बात निकवाने का जिम्मा सौंप देता है. लौटने पर श्रीमती जी बताती हैं कि आशू ने सारी बातें सच-सच उगल दी हैं. ग्यारह आने पैसे में वह पतंग वाले को पाजेब दे आया है. पतंग वाले ने पांच आने दिये हैं और बाकी थोड़े थोड़े करके देने को कहा है. उन्होंने आगे जोड़ा—"दो-तीन घंटे मैं मगज मारती रही. हाय राम, बच्चे का भी क्या जी होता है." लेखक को खुशी हुई कि पांच आने दे कर पाजेब वापस ले आयेंगे. लेकिन पतंग वाला भी कितना बदमाश है कि बच्चों से ऐसी चीज लेता है. उसे तो जेल में भेज देना चाहिए. लेखक ने बाहर खेल रहे आशू को नौकर से कह कर बुलवाया. पिता को देखते ही आशू फिर उदास हो गया. पिता ने बहलाते हुए उसे गोद में उठा लिया प्यार किया और कहा "हमारे आशुतोष बड़ा सच्चा लड़का है."

लेखक फिर कहने लगा कि पांच आने में पाजेब बेच दी. हमसे मांग लेते तो क्या हम न देते. चलो अब ऐसा मत करना. इसके बाद कमरे में ले जाकर आशुतोष से पूछताछ शुरू कर दी. आशू सारे जवाब हां, नहीं में देता रहा. देर तक सवाल-जवाब का सिलसिला यूँ ही जारी रहा. लेखक को आशुतोष पर क्रोध आने लगा और वह जोर-जोर से सवाल करने लगा. उसने पूछा –" सच क्यों नहीं बोलते जी? सच तो बताओ कितनी इकन्नियाँ थीं और कितना क्या था?" बार-बार वही बातें दोहराने पर आशू डर गया.

लेखक ने उसके कान पकड़कर खींचे इस पर भी वह कुछ न बोला. न रोया ही बस डर के मारे पीला हो गया और गुमसुम से खड़ा रहा. इसपर लेखक ने नौकर बंसी को बुलाकर आशू को कोठारी में बंद करने का आदेश दिया.

आशू कोठरी में बंद होने पर भी रोया नहीं, पर उसका मुंह जरूर सूजा गया. दस मिनट के बाद लेखक ने आशू को बुलवाया. फिर पाजेब की पूछताछ शुरू हो गई. लेखक को लगा कि बच्चा शायद अब कुछ बोले पर बच्चा कुछ न बोला. लेखक ने पूछा कि पतंग वाला कौन सा था. आशू कुछ न बोला. लेखक-" वह चौराहे वाला ? बोलो—. आशू—"हां." फिर लेखक ने समझाया कि अपने चाचा के साथ जाओ और बता देना कि पतंग वाला कौन सा है. वो सब देख लेंगे. लेखक ने अपने भाई को बुलाया और सब समझाकर कहा कि पांच आने पैसे ले जाओ. पहले तो आशुतोष पैसे जाकर देगा और पाजेब ले लेगा, तुम दूर ही रहना. अगर पतंग वाले ने पाजेब नहीं दी तो उसे डांटना, कहना कि पुलिस में दे देंगे. सख्ती से पेश आना. लेखक ने फिर आशुतोष को चाचा के साथ जाने को कहा. पर आशू ने इंकार कर दिया. इसपर लेखक ने समझाया कि बेटा जाओ पैसे देकर अपनी चीज ले लेना. भला कोई रूपये की चीज पांच आने में बेचता है क्या? जाओ कुछ नहीं होगा पैसे देकर मांग ले लेना अगर न दे तो कोई बात नहीं. फिर तुम्हें उससे कोई मतलब नहीं. फिर भी आशू ने जाने से इनकार कर दिया. लेखक को बुरा लगा कि आखिर समझाने पर भी बच्चा बात नहीं मानता. उसने फिर डांट कर कहा कि, "क्यों रे, नहीं जाएगा?" आशू ने सिर हिला कर मना कर दिया. लेखक ने अपने छोटे भाई प्रकाश को बुलवाया और जबरदस्ती उसे ले जाने का आदेश दिया. प्रकाश ने आशू को पकड़ा. बच्चा चाचा से अपने को छुड़ाने की कोशिश में हाँथ-पाँव मारता रहा. लेखक ने फिर धैर्य धारण करते हुए बच्चे को समझाया. घर की चीज के खो जाने की बात कही. प्रकाश को कहा कि आशू को जो चीज बाजार से चाहिय उसे दिला देना. आशू जैसे-तैसे चाचा के साथ गया. मानो उसका उठाना भी भारी हो रहा हो. लेखक को उसके इस व्यवहार पर बहुत गुस्सा आ रहा था. पर उसने यह सोचकर कि गुस्से से बच्चे सँभलने की जगह और बिगड़ जाते हैं उसने खुद पर काबू किया.

कुछ देर बाद आशू चाचा के पास से भाग गया और प्रकाश वापस लौट आया. लेखक को बहुत आश्चर्य हुआ. उसने फिर आशू की पूछ ली. उसे फिर पकड़ कर बुलाया. इस बार गुस्से में दो थप्पड़ भी जड़ दिये. आशू एक बार चीखकर चुप हो गया. लेखक ने फिर दो-चार बातें सुनकर उसे कोठारी में बंद करने का आदेश दिया. एक-आध घंटे बाद जब लेखक का दिमाग ठंडा हुआ तो उसने सोचा कि मैं यह ठीक नहीं कर रहा हूँ. जब दूसरा रास्ता नहीं दीखता तो मार-पीट कर मन को ठिकाना देने की आदत पड़ जाती है. पर इसका उसे अभ्यास नहीं है. उसने प्रकाश को बुलाकर कहा कि बंसी को लेकर वह पतंग वाले के पास जाए और पता करे कि पाजेब किसने ली है. होशियारी से मालूम करना, सख्ती से पेश आना. कुछ देर बाद प्रकाश लौट आया और बताया कि किसी के पास पाजेब नहीं है. लेखक ने प्रकाश को भी उसकी अकर्मण्यता के बारे में सुनाया और जाने का आदेश दिया.

कोठरी खुलवाई गई तो आशुतोष जमीन पर सो रहा था. लेखक ने उसे जगाया और पूछा कि क्या हाल है? पहले तो आशू कुछ समझा नहीं फिर पिछली बातें याद आने पर वही जिद, अकड़ और प्रतिकार के भाव उसके चेहरे पर आ गये. लेखक ने फिर कहा कि जाओ पाजेब ले आओ नहीं तो फिर कोठारी में बंद कर देंगे. आशुतोष पर इस बात का कोई असर नहीं हुआ. पिता ने एक रूपए निकाल कर दिये और समझाकर कहा कि इसे पतंग वाले को दे देना और पाजेब मांग लेना. इसपर आशुतोष ने कहा कि अगर पाजेब पतंग वाले के पास नहीं हुई तो वह कहाँ से लाकर देगा?. पिता- क्या मतलब? तुम्हीं ने तो कहा था कि पाजेब पांच आने में दी है. अपने साथ छुन्नू को भी ले जाना. आशू फिर भी मुंह बांधे खड़ा रहा. पिता को गुस्सा आया पर सामने बुआ को आती देख वह कुछ न बोला और आशू को प्रेमपूर्वक उसके चाचा के साथ जाने को कहा. बुआ ने आशू को प्यार किया और कहा कि कहाँ जा रहे हों मैं तो तुम्हारे लिए केले और मिठाई लाई हूँ. आशुतोष रुकने वाला था कि पिता ने उसे जाने का आदेश दिया और बुआ से भी कहा कि अभी उसे जाने दो. पर आशुतोष मचलने लगा तो पिता ने उसे डांट कर कहा कि प्रकाश इसे ले जाओ. बुआ ने फिर बात जाननी चाही पर लेखक ने नौकर बंसी को बुलाकर प्रकाश और आशुतोष के साथ जाने को कहा. बुआ ने फिर पूछा कि क्यों बच्चे को सता रहे हों? लेखक ने बात टाल दी.

आशुतोष के जाते ही बुआ ने लेखक से हाल-चल लिया, इधर-उधर की बातें की. फिर छोटा सा बक्सा सामने सरकाकर बोलीं कि इसमें वह कागज़ हैं जो तुमने मंगाए थे. और बास्केट की जेब में हाँथ डालकर पाजेब निकाली. पाजेब देखते ही लेखक के होश उड़ गए. उसे लगा कि जैसे सामने पाजेब न होकर बिच्छू हो. बुआ बोलीं कि—" उस रोज भूल से यह एक पाजेब मेरे साथ ही चली गयी थी."

MOST EXPECTED QUESTIONS :

1- लेखक ने पाजेब की क्या विशेषता बताई है?

2- पास-पड़ोस में सब नन्ही-बड़ी सबके पैरों में पाजेब देखकर मुन्नी की क्या प्रतिक्रिया हुई?

3- मुन्नी को पाजेब किसने लाकर दी? और मुन्नी के पैरों में पाजेब देख आस-पास के लोगों में क्या प्रतिक्रिया हुई?

4- बुआ ने आशुतोष को लड़के और लड़की में क्या फर्क बताया?

5- पाजेब के न मिलने पर लेखक की पत्नी ने किस पर शक किया और क्यों?

6- लेखक की पत्नी ने नौकरों की क्या-क्या विशेषताएं बताईं?

7- लेखक के अनुसार बालकों का स्वभाव कैसा होता है और उनके कार्यों के प्रति अभिभावकों की क्या जिम्मेदारी बनती है?

8- आशुतोष के किस भाव से लेखक को यह प्रतीत हुआ की वही पाजेब के न मिलने के पीछे दोषी है?

9- आशुतोष के यह कबूलने पर कि पाजेब उसने छुन्नू को दी है! छुन्नू की माँ ने क्या किया?

10- एक पिता के रूप में लेखक के व्यवहार की समीक्षा कीजिए?

11- प्रस्तुत कहानी में पिता पुत्र संबंधों पड़ताल करें?

12- कहानी में प्रस्तुत स्त्रियों की आभूषण प्रियता के बारे में बताएं?

13- 'बालकों में एक-दूसरे की वस्तु के प्रति इर्ष्या और प्रतिद्वंदिता का भाव रहता है' कहानी के आधार पर इस बात की समीक्षा कीजिए?

14- आपकी समझ से पाजेब चोरी करने के सम्बन्ध में आशुतोष की स्वीकारोक्ति के पीछे कौन से कारण हैं?

15- कहानी की प्रासंगिकता के बारे में विचार करें?

16- पाजेब कहानी के शीर्षक की शार्थकता बताएं?

17- कहानी के अंत में पाजेब किसके पास से मिली. लेखक की इसपर क्या प्रतिक्रिया हुई?

कहानी 'पिता'

कहानी का सार

ज्ञानरंजन अपनी कहानी 'पिता' में पिता-पुत्र संबंधों के यथार्थ को अपनी पूर्ववर्ती कहानियों की तुलना में काफी अलग ढंग से प्रस्तुत करते हैं। पुत्र उमस भरी गर्म रात में घर लौटा, उसने आध पल को बिस्तर का अंदाजा लेने के लिए बिजली जलाई। बिस्तर फर्श पर ही पड़े थे। पत्नी ने सिर्फ इतना कहा कि 'आ गये' और बच्चे की तरफ करवट लेकर चुप हो गयी।

वातावरण बहुत गर्म है। गर्मी की वजह से कपड़े पसीने में पूरी तरह से भीग चुके हैं। घर में सभी लोग सो चुके है घर के भीतर सिर्फ वही जागा है। घर में अगर पुत्र जागा है तो बाहर पिता भी जागे हुए हैं। रोती बिल्ली को देख पिता सचेत हो गये और उन्होंने डंडे की आवाज़ से बिल्ली को भगा दिया। जब वह घूम फिर कर लौट रहा था तब भी उसने कनखी से पिता को गंजी से अपनी पीठ खुजाते देखा था। लेकिन वह पिता से बचकर घर में घुस गया। पहले उसे लगा कि पिता को गर्मी की वजह से शायद नींद नहीं आ रही लेकिन फिर एकाएक उसका मन रोष से भर गया क्योंकि घर के सभी लोग पिता से पंखे के नीचे सोने के लिये कहा करते हैं लेकिन पिता हैं कि सुनते ही नहीं।

कुछ देर वह अपने बिस्तर पर ही पड़ा रहा फिर कुछ देर बाद उत्सुकतावश उठा और उसने खिड़की से बाहर देखा। पिता बेचैन थे सड़क की बत्ती बिल्कुल उनकी छाती पर पड़ रही थी वे बार-बार करवट बदल रहे थे। फिर कुछ देर बाद उठकर पंखा झलने लगे। इसके बाद पिता उठकर चौकीदारों की तरह घर के चारों ओर घूमने लगते हैं। पुत्र को यह सब अपनी प्रतिष्ठा के खिलाफ़ लगता है। उसे लगता है कि इससे पिता मोहल्ले में हमारे सम्मान को ठेस पहुँचा रहे हैं। वह कमरे की दीवार से पीठ टिकाकर तनाव में सोचने लगता है। बिजली का मीटर तेज चल रहा है सब लोग आराम से पंखे के नीचे सो रहे हैं लेकिन पिता की रात कष्ट में ही बीत रही है। पिता जीवन की अनिवार्य सुविधाओं से भी चिढ़ते है क्यों? पिता चौक से आने के लिये रिक्शे वाले से चार आने मांगने पर तीन आने और तीन आने माँगने पर दो आने लेने के लिये काफी चिरौरी करते हैं। घर में वॉश वेसिन है पर वे बाहर जाकर बगियावाले नल पर ही कुल्ला-दातुन करते हैं। गुसलखाने में खूबसूरत शॉवर होने के बावजूद पिता को आँगन में धोती को लंगोट की तरह लपेटकर तेल चुपड़े बदन पर बाल्टी भर-भर पानी डालना ही भाता है। इसलिये वह पिता पर ही झल्लाने लगता है।

लड़कों द्वारा बाजार से लाई गयी बिस्किटें, मेहँगे फल पिता कुछ भी नहीं लेते। कभी लेते भी हैं तो बहुत नाक-भौं सिकोड़कर। बाहर पिता ने लड़ते चिचियाते कुत्तों को भगाया। वह पिता के व्यवहार से फिर दुखी हो गया। उसने कितनी बार पिता से कहा

कि मुहल्ले में हम लोगो का सम्मान है आप भीतर सोया कीजिये। अच्छे कपड़े पहना कीजिये और बाहर पहरा मत दिया कीजिए ये सब बहुत भद्दा लगता है पर पिता इन सब बातों पर कोई ध्यान नहीं देते। कितना भी बढ़िया कपड़ा लाकर दो और कहो कि इसे किसी अच्छे दर्जी से सिलवा लो तो भी वे मुहल्ले के ही किसी भी सामान्य से दर्जी से कमीज कुरता सिलवा लेते हैं। इस पर पिता के अपने तर्क हैं। घर के लोग पिता के इस व्यवहार को देखकर हर बार प्रण लेते है कि वे अब पिता को उनके हाल पर छोड़ देंगे लेकिन कुछ समय बाद फिर से पिता के लिये सबका मन उमड़ने लगता है।

वह इन सब बातों को भुलाना चाहता था उसने सोने की इच्छा की पर खुद को असहाय पाया। फिर उसने अपनी पत्नी देवा के बारे में सोचने की, उसके शरीर को स्पर्श करने की इच्छा मन में की ताकि उसका ध्यान पिता से हट सके पर देवा के कुल्हे को स्पर्श कर भी वह अपने भीतर उत्तेजना पैदा नहीं कर सका। वह पिता के लिये द्वंद्व की स्थिति से भर जाता है। एक स्तर पर उसे पिता बड़े हठी दंभी और अहंकारी लगते हैं लेकिन दूसरे ही क्षण उसे लगता है कि *पिता लगातार विजयी है। कठोर है तो क्या, उन्होंने पुत्रों के सामने अपने को कभी पसारा नहीं।* वह इन सब बातों को सोचकर गौरवांवित और लज्जित दोनों विरोधाभासी अवस्थाओं को महसूस करता है। एक बार उसके मन में आया की वह पिता को आग्रहपूर्वक भीतर आकर पंखे में सोने के लिये कहे लेकिन वह ऐसा न कर सका। पूरी रात जागने के बाद अलसुबह उसकी नींद काफूर हो चुकी थी उसने पिता को देखा। *पिता सो नही गये है अथवा कुछ सोकर पुनः जगे हुए है। पता नहीं। अभी ही उन्होंने हे राम कहकर जम्हाई ली है।* पिता उठे उन्होंने अपना बिस्तर गोल करके एक सिरहाने पर रखा और खाट की बाध को पानी से तर किया और पंखा झलने लगे। तड़का होने में अभी देर थी। *वह खिड़की से हटकर बिस्तर पर आया। अंदर हवा वैसी ही लू की तरह गर्म है। दूसरे कमरे स्तब्ध हैं पता नहीं बाहर भी उमस और बेचैनी होगी। वह जागते हुए सोचने लगा, अब पिता निश्चित रूप से सो गये हैं शायद।*

'पिता' ज्ञानरंजन की महत्वपूर्ण कहानियों में से एक है। पिता के अलावा ज्ञानरंजन की पहचान 'संबंध', 'फेंस के इधर-उधर' और 'घंटा' कहानियों से भी बनी है। और यह पहचान इस तरह की है कि लगभग तीस वर्षों तक कहानियाँ न लिखने के बावजूद भी साहित्य समाज और उनका पाठक-वर्ग इन्हें अपने जेहन से नहीं निकाल सका है। ऐसा क्या है ज्ञानरंजन में जो उन्हें अपने समकालीनों और पूर्ववर्ती कहानीकारों से अलग करता है।

ज्ञानरंजन का दौर दरअसल आज़ादी के तुरंत बाद वाला (मोहभंग, विभाजनग्रस्तता आदि) दौर न होकर उससे उबरने और संबंधों में आई खटास को दूर करने और उन्हें मजबूत करने का दौर था। पर इस दौर की विडंबना यह थी कि संबंध बनाए रखने के चक्कर में हाथ से छूटते जा रहे थे जैसे रेत मुट्ठी बंद करने पर हाथ से तेजी से छूटती है। ज्ञानरंजन ने अपनी कहानियों की पृष्ठभूमि इन्हीं संबंधों खासकर पारिवारिक संबंधों को बनाया है।

उनकी कहानियों के समीक्षकों को यह मुगालता हो सकता है कि वे पारिवारिक संबंधों में आई दरार और दो पीढियों के बीच बढती दूरियों को अपनी कहानियों का आधार बनाते है जहाँ पुरानी पीढ़ी बेहद जिद्दी, और रूढिवादी है। पर उनकी कहानी *पिता* इसे तुरंत खारिज कर देती है और इसका सही विश्लेषण इसके पाठ में ही निहित दिखाते हुए संयुक्त परिवार के विघटन और दो पीढियों में आई भावनात्मक दूरी जैसे जुमलो को अपनी कहानियों से कोसो दूर रख छोड़ती है। इसलिये भी ज्ञानरंजन की कहानियों का पाठ बेहद सावधानी से किया जाना चाहिए असावधानी की अवस्था में उपरोक्त मुगालते फिर फिर पैदा होंगे। ज्ञानरंजन की पहचान सिर्फ कहानियों ने ही नहीं बनाई। उन्होंने अपनी पहचान *पहल* के प्रगतिशील और कर्मठ संपादक के रूप में भी अर्जित की है।

पिता कहानी उमस भरी गर्म रात अथवा एक प्रहर में एक पिता की मनःस्थिति को पुत्र की नज़र से अथवा वाचक के रूप में बयां करती है। एक पुत्र जो इस उमस भरी रात में घर लौटा है इस डर से कि कहीं किसी की नींद न उचट जाए सिर्फ आध पल को अपने बिस्तर का अंदाज लेने के लिए बिजली जलाता है। बिस्तर फर्श पर ही पड़े हैं। पत्नी सोते-सोते सिर्फ इतना कहती है कि 'आ गये' और बच्चे की तरफ करवट लेकर चुप हो जाती है। यह कहानी का सबसे शुरुआती हिस्सा है जो कहानी की पृष्ठभूमि का निर्माता भी है। कथाकार यहाँ घर में भरी गर्म उमस का संकेत देने के साथ परिवार के लोगों के दिल में भरी उमस का संकेत भी देता है। यहाँ से कहानी शुरू जरूर होती है पर इसे आधार इसके बिल्कुल बाद वाले हिस्से में मिलता है। यहाँ कहानी का उद्देश्य अपनी या अपनी पत्नी की स्थिति दर्शाना नहीं बल्कि सिर्फ वातावरण की निर्मिति करना है। हालाँकि सातवें दशक की कथा या साठोत्तरी कहानी में पूर्वनिर्धारित कथा तत्वों का लगभग ह्रास हो चुका है लेकिन तब भी हम कहेंगे कि यहाँ कथातत्व ह्रास या खत्म होने की अपेक्षा परिवर्तित हो गये हैं अर्थात अपने आधारों या कहने के ढंग में परिवर्तन कर लेते हैं। जिसकी शुरुआत स्वतंत्रता के साथ ही हिंदी कहानी में हो जाती है। जिसके प्रयोग जैनेंद्र और अज्ञेय ने पहले ही कर दिये थे। यही कारण

है कि यहाँ हमें कहानी का उद्देश्य, देशकाल और वातावरण या फिर चरित्र-चित्रण प्रत्यक्ष रूप में नहीं दिखता। दरअसल इस दौर के कथाकार का लक्ष्य कहानी कहने से ज्यादा अपनी स्थिति का समकालीन संदर्भों में उद्घाटन करना रहा है। यही कारण है कि साठोत्तरी कहानी में सैल्फ(मैं) कहानी कहता है। जैसाकि ज्ञानरंजन की अधिकतर कहानियों में हमें दिखता है।

ज्ञानरंजन की यह विशेषता है कि वह अपनी कहानियों में स्वयं को सामाजिक स्थितियों के भीतर और समकालीन संदर्भों में स्थापित करने में कामयाब रहें हैं। पिता कहानी को कई आलोचकों ने पिता-विरोधी कहानी के रूप में भी देखा है जो इस कहानी की एक गलत व्याख्या है। यह कहानी न तो कहीं पिता विरोधी है और न हीं इसमें किसी खास पीढ़ी को निशाना बनाया गया है। हाँ, यह कहानी अपनी पूर्ववर्ती कहानियों की अपेक्षा पिता-पुत्र संबंधों का थोड़ा जुदा विश्लेषण जरूर करती है। पिता और पुत्र के मध्य दो पीढियों का फासला होने के बावजूद यह कहानी पिता और पुत्र के संबंधों की स्वातंत्र्योत्तर समझ विकसित करने और उनमे उपजने वाले भावी द्वंद्व की शुरुआती अवस्था पर बात करती है।

यहाँ पिता और पुत्र के मध्य एक प्रेममयी और भावनात्मक दूरी है लेकिन इसके बावजूद दोनों एक दूसरे की चिंता करते हैं। इसलिये यह कहना कि यहाँ बूढों की दयनीय स्थिति दर्शायी गयी है(जैसाकि कई विश्लेषकों ने कहा है) सरासर गलत होगा। पिता और पुत्र पास रहने पर भी साथ नहीं रह पाते। लेकिन यह सिर्फ इस कहानी की ही नहीं उस पूरे दौर और यहाँ तक कि आज के दौर की भी विडंबना है। दोनों के अपने आग्रह हैं पर कौन दुराग्रह से ग्रस्त है यह कहानीकार कहीं नहीं बताता सिर्फ पिता के संस्कारों और उनकी कार्यविधियों का ब्योरा वह हमारे सामने रखता है। यह बात सही है कि सरसरी और ऊपरी नजर से देखने पर इस कहानी में पिता की जिद और पुत्र की इच्छाओं की कद्र न करने के कारण दोषी पिता ही ठहरते हैं। पर यह न तो कहानी का लक्ष्य है और न ही कहानीकार का। इसलिये हमने शुरू में ही कहा यह कहानी अपने पाठ के दौरान काफी सावधानी बरतने की मांग करती है।

Most Expected Questions

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. पिता कहानी का मुख्य आधार बिंदु(थीम) क्या है?
2. इस कहानी में उभरे पारिवारिक संबंध अपनी पूर्ववर्ती कहानियों से किस प्रकार भिन्न हैं?
3. एक पाठक के रूप में पिता के चरित्र के प्रति आपकी क्या प्रतिक्रिया है?
4. पिता कहानी की केंद्रीय संवेदना क्या है?
5. पिता कहानी किस दृष्टि-बिंदु से कही गयी है?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. पिता कहानी में पिता का चरित्र चित्रण किजिए।
2. पुत्र की बेचैनी का कारण क्या था?
3. घर में शॉवर लगवाने के बावजूद पिता नल पर जाकर क्यों नहाते थे?
4. पिता कहानी में गर्मी का प्रतीकार्थ क्या है? स्पष्ट कीजिये।
5. साठोत्तरी कहानी के संदर्भ में ज्ञानरंजन की कहानीकला का मूल्याँकन कीजिये ?